दिनांक :- 17-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डा० फारूक आजम (अतिथि शिक्षक)

अंतरस्नातक :- 12वीं पइतिहास अनुसांगीक)

एकाई :दो सिंधु घाटी की सभ्यता और उसकी उत्पत्ति

आश्चर्य एंव खेद का विषय है कि इतनी विस्तृत सभ्यता होने के बावजूद भी इस सभ्यता के उद्भव और विकास के सम्बंध मे विद्वानों मे भारी मतभेद है। अभी तक की खोजों से इस प्रश्न पर कोई भी प्रकाश नही पड़ सका है. करण कि इस सभ्यता के अवशेष जहां कहीं भी मिले हैं। अपनी पूर्ण, विकासित अवस्था मे ही मिले है।

सर जॉन मार्शल, गार्डन चाइल्ड, सर मार्टीमर व्हीलर आदि पुराविदो की मान्यता है कि सैन्धव सभ्यता की उत्पत्ति मेसोपोटामिया की सुमेरियन सभ्यता से हुई।

इन विद्वानों के अनुसार सुमेरियन सभ्यता सैंधव सभ्यता से प्राचीनतर थी। इन दोनों सभ्यताओं में कुछ समान विशेषतायें देखने को मिलती है जो इस प्रकार है।

(1) दोनों नगरीय (Urban) सभ्यतायें है।

(2) दोनों के निवासी कांसे तथा ताँबे के साथ-साथ पाषाण के लघु उपकरणों का प्रयोग करते थे।

(3) दोनों के भवन कच्ची तथा पक्की ईंटों से बनाए गये थे।

(4) दोनों सभ्यताओं के लोग चाक पर मिट्टी के बर्तन बनाते थे।

(5) दोनों को लिपि का ज्ञान था।

उपर्युक्त समानताओं के आधार पर हीलर ने सैंधव सभ्यता को सुमेरियन सभ्यता का एक उपनिवेश बताया है। किंतु गहराई से विचार करने पर यह मत तर्कसंगत नहीं प्रतीत होता है। कारण कि दोनों सभ्यताओं में इन ग्राह्य समानताओं के होते हुए भी कुछ मौलिक विषमतायें भी है जिनको हम

उपेक्षा नही कर सकते। सैंधव सभ्यता की नगर-योजना सुमेरियन सभ्यता की अपेक्षा अधिक सुव्यवस्थित है। दोनों के बर्तन, उपकरण मूर्तियाँ, मुहरें आदि आकार प्रकार में काफी भिन्न है। यह सही है कि दोनों ही सभ्यताओं में लिपि का प्रचलन था। किंतु दोनों ही लिपियाँ परस्पर भिन्न है। जहाँ सुमेरियन लिपि में 900 अक्षर है, वहाँ सैंधव लिपि में केवल 500 अक्षर मिलते हैं। इन विभिन्नताओं के कारण दोनों सभ्यताओं को समान मानना समीचीन नही होगा। पुनश्च यह मत उस समय प्रतिपादित किया गया जबकि भारतीय उपमहाद्वीप में प्राक् हड़प्पाई सांस्कृतिक परिवेश का ज्ञान हमें नही था। किंतु अब इस क्षेत्र में प्राक् हड़प्पाई पुरास्थलों से प्रचुर सामग्रियों के मिल जाने के पश्चात् यह स्पष्ट हो जाता है कि सैंधव सभ्यता की जड़ें भारत भूमि में ही जमी थी

और इसके लिये किसी बाह्य प्रेरणा की आवश्यकता नही थी। यह पूर्वगामी संस्कृतियो के क्रमिक विकास का परिणाम है जिसके तार मेहरगढ़ के नवपाषाणिक स्थल से जुड़े है। अतः हम सैंधव सभ्यता को सुमेरियन उपनिवेशीकरण का परिणाम नही कह सकते है। राव के अनुसार सिंध सभ्यता के विकास का श्रेय उसी संस्कृति को दिया जा सकता है जो कालक्रम की दृष्टि से उससे प्राचीन हो तथा उसके साथ-साथ विद्यमान रही हो, जिसमें परिवर्तन के क्रमिक चरण स्पष्ट हो तथा वे तत्व हो जो सैंधव सभ्यता को विशिष्टता प्रदान करते है।

प्रो० टी० एन० रामचन्द्रन, के० एन० शास्त्री पुसाल्कर एस० आर० राव आदि विद्वान वैदिक आर्यों को ही इस सभ्यता का निर्माता मानते है। परंतु अनेक विद्वान

Scanned with CamScanner

इसे स्वीकार नही करते क्योंकि उनके अनुसार दोनों ही सभ्यताओं के रीति-रिवाजों, धार्मिक तथा आर्थिक परम्पराओं से पर्याप्त विभिन्नतायें दिखाई देती है। सैंधव तथा वैदिक सभ्यताओं के मुख्य अन्तर इस प्रकार है

(1) वैदिक आर्यों की सभ्यता ग्रामीण एंव कृषि प्रधान थी जबकि सैंधव सभ्यता नगरीय तथा व्यापार व्यवसाय प्रधान थी। आर्यों के मकान घास-फूस तथा बांस की सहायता से बनते थे किंतु सैंधव लोग इसके लिये पक्की ईटो का प्रयोग करते थे।

(2) सैंधव सभ्यता के निर्माता पाषाण तथा काँसे के उपकरणों का प्रयोग करते थे और लोहे से परिचित नही थे। इसके विपरीत वैदिक आर्यों को लोहे का ज्ञान था।

(3) वैदिक आर्य इन्द्र, वरुण आदि देवताओं के उपासक थे, वे यज्ञ करते थे तथा लिंग-पूजा और मूर्ति पूजा के विरोधी थे।

परंतु सैंधव लोग मुख्य रूप से मातादेवी तथा शिव के पूजक थे, लिङ्ग की पूजा करते थे तथा मूर्ति-पूजा के समर्थक थे।

(4) आर्यों का प्रिय पशु अश्व था जिसकी सहायता से वे विजय प्राप्त करते थे। किंतु सैंधव लोग अश्व से परिचित नहीं थे। सिंधु सभ्यता के लोग व्याघ्र तथा हाथी से भी परिचित थे क्योंकि उनकी मुद्राओं पर इन पशुओं का अंकन हुआ है। इसके विपरीत वैदिक आर्यों को इनका ज्ञान नहीं था।

(5) आर्यों के धार्मिक जीवन में गाय की महत्ता थी। इसे अघ्न्या कहा गया है। इसके विपरीत सैंधव लोग वृषभ को पवित्र रूप पूज्य मानते थे।

(6) सैन्धव निवासियों के पास अपनी एक लिपि थी, जबकि आर्य लिपि से परिचित नहीं लगते। उनकी शिक्षा प्रणाली मौखिक थी।

यह प्रस्तावना नितान्त तथ्यहीन है कि सिंधु सभ्यता

नगर एवं साक्षर थी तथा वैदिक सभ्यता नगर एवं साक्षर थी तथा वैदिक सभ्यता ग्रामीण, पशुचारी एवं निरक्षर। डा० जी०सी पाण्डे ने हाल ही में प्रकाशित अपने ग्रंथ वैदिक संस्कृति में इस बात का उल्लेख उल्लेख किया है कि ऋक्संहित में कम से कम 85 बार 'पुर' का उल्लेख हुआ है जबकि ग्राम मात्र नौ बार तथा ग्राम्य एकबार आता है न तो हड़प्पा सभ्यता मात्र नागरिक थी, न वैदिक सभ्यता मात्र पशुपालक-यायावरीय। दोनों ही सभ्यतायें देश-काल में विस्तार और प्राविधिक विकास की दृष्टि से समान है। स्थूल रूप से उनमें एक ही विशाल सभ्यता के विविध पक्ष, प्रदेश या अवस्थायें देखी जा सकती है। वेदों में लेखन परम्परा के अभाव का कारण यह नहीं है कि आर्य लिपि से अपरिचित थे।